Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

Original Article

उच्च शिक्षा में जाति और धर्म से संबंधित सामाजिक असमानता, छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर उनके दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन

डॉ. अर्चना पाण्डेय
व्याख्याता, मनोविज्ञान विभाग एम.वी. कॉलेज, बक्सर
Email-archanaguddyever@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170809
ISSN: 2230-9578

Volume 17
Issue 8(B)|
Pp. 59-64
Aug 2025

Submitted: 11 July. 2025
Revised: 26 July. 2025
Accepted: 11 Aug. 2025
Published: 31 Aug. 2025

शोधसार:

यह शोध सार उच्च शिक्षा के परिदृश्य में जाति और धर्म से संबंधित सामाजिक असमानताओं के व्यापक मुद्दे और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर उनके गहन, दीर्घकालिक संचयी प्रभावों की पड़ताल करता है। छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक संचयी प्रभाव विशेष रूप से चिंताजनक हैं। भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार के संपर्क में आने से छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक तनाव इस शोध अध्ययन में पाया पाया जो चिंता विकार, अवसाद और यहाँ तक कि अभिघातज के बाद के तनाव विकार (PTSD) सहित कई मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़ा हुआ था। इसके अलावा, इन असमानताओं से निपटने और उनसे निपटने की निरंतर आवश्यकता के परिणामस्वरूप शैक्षणिक समुदाय के भीतर निराशा, कम आत्मसम्मान और अपनेपन की भावना में कमी इस शोध अध्ययन में पायी गयी। ये मनोवैज्ञानिक बोझ शैक्षणिक जुड़ाव को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहे थे, जिससे छात्रों में निम्न ग्रेड, उच्च ड्रॉपआउट दर और भविष्य में सफलता के अवसर कम होते पाए गए। पर्याप्त संस्थागत समर्थन का अभाव और भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण का बने रहना इन प्रभावों को और बढ़ाता पाया पाया है, जिससे छात्रों में एक दुष्चक्र, इस शोध अध्ययन में बनता पाया पाया। जहाँ छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी संघर्ष, शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में बाधा डाल रहे थे। इन गहरे मुद्दों से निपटने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें भेदभाव–विरोधी नीतियाँ, सकारात्मक कार्रवाई, सांस्कृतिक रूप से सक्षम परामर्श सेवाएँ, और सभी छात्रों के लिए, उनकी जाति या धार्मिक पृष्ठभूमि से परे, एक समावेशी और समान शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने के लिए एक सक्रिय संस्थागत प्रतिबद्धता शामिल हो। यह शोध सारांश इन छात्र आबादी के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए व्यापक नीतिगत हस्तक्षेपों, समावेशी संस्थागत प्रथाओं और मज़बूत मानसिक स्वास्थ्य सहायता सेवाओं की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। सामाजिक असमानता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच जटिल अंतर्संबंध को समझना सभी छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देने वाले समान और सहायक उच्च शिक्षा वातावरण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

शब्द कुंजी: *सामाजिक असमानता, मानसिक स्वास्थ्य, दीर्घकालिक प्रभाव, समावेशी बहुआयामी दृष्टिकोण*

परिचय

उच्च शिक्षा का परिदृश्य, जिसे अक्सर बौद्धिक विकास और सामाजिक गतिशीलता के लिए एक लोकतांत्रिक योग्यता–आधारित स्थान के रूप में देखा जाता है, ये अधिकांश गहरी जड़ें जमाए बैठी सामाजिक असमानताओं से घिरा रहता है। इनमें, जाति और धर्म से जुड़ी सामाजिक असमानताएँ व्यापक शक्तियों के रूप में उभर कर सामने आती हैं जो छात्रों के अनुभवों, अवसरों और सबसे महत्वपूर्ण, उनके मानसिक स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। **गुप्ता, ए., और कॉफ़ी, डी. (2020)1.** जहाँ एक ओर शैक्षणिक संस्थान समावेशिता के लिए प्रयासरत हैं, वहीं दूसरी ओर जाति–आधारित भेदभाव और धार्मिक हाशिए पर धकेले जाने की ऐतिहासिक और सतत वास्तविकताएँ विश्वविद्यालय के वातावरण में सूक्ष्म और प्रत्यक्ष रूपों में प्रकट होती हैं, जिससे प्रभावित छात्रों के लिए विशिष्ट तनाव पैदा होते हैं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.अर्चना पाण्डेय , व्याख्याता, मनोविज्ञान विभाग एम.वी. कॉलेज, बक्सर

How to cite this article:
पाण्डेय, . अर्चना . (2025). उच्च शिक्षा में जाति और धर्म से संबंधित सामाजिक असमानता, छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर उनके दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन. Journal of Research and Development, 17(8(B)), 59–64. https://doi.org/10.5281/zenodo.17254944

Quick Response Code:

Website:
https://jrdrvb.org/

DOI:
10.5281/zenodo.17254944

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

ये असमानताएँ केवल छिटपुट घटनाएँ नहीं हैं, बल्कि एक संचयी बोझ में योगदान करती हैं जो समय के साथ मानसिक स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करता है, जिससे दीर्घकालिक तनाव और चिंता से लेकर अवसाद और अपनेपन की भावना में कमी जैसी समस्याएँ पैदा होती हैं। **रॉय, डी., और चक्रवर्ती, एस. (2019) 3.** इन सामाजिक असमानताओं के मनोवैज्ञानिक संकट में बदलने के बहुआयामी तरीकों को समझना प्रभावी हस्तक्षेप विकसित करने और वास्तव में न्यायसंगत शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों में जाति–आधारित असमानता छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को कई तरीकों से प्रभावित करती है, जिसमें भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार, अपमान, और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच शामिल है। यद्यपि विभिन्न शोधों ने वैश्विक संदर्भों में नस्ल, जातीयता, लिंग और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वास्थ्य असमानताओं का पता लगाया है, फिर भी भारत जैसे निम्न और मध्यम आय वाले देशों में मानसिक स्वास्थ्य पर जाति और धर्म का विशिष्ट प्रभाव अभी भी कम ही समझा गया है। इन सामाजिक विभाजनों से प्रभावित होने वाली बड़ी आबादी को देखते हुए ज्ञान में यह अंतर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उच्च शिक्षा को सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता, मनोवैज्ञानिक मुक्ति और मानसिक स्वायत्तता के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग के रूप में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है, **प्रकाश, एस., और गुप्ता, आर. (2018) 4.** हालाँकि, भारत में, ऐतिहासिक असमानताओं, वित्तीय बाधाओं और संस्थागत पूर्वाग्रहों में निहित प्रणालीगत बाधाएँ अनुसूचित जातियों (एससी), अनुसूचित जनजातियों (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्गों (ओबीसी) सहित हाशिए के समुदायों के लिए गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा तक पहुँच को महत्वपूर्ण रूप से बाधित करती हैं। ये लगातार असमानताएँ न केवल व्यक्तिगत प्रगति में बाधा डालती हैं, बल्कि भारत के सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के संवैधानिक लक्ष्यों को भी कमजोर करती हैं। भारतीय जाति व्यवस्था, दुनिया के सबसे पुराने व्यवस्थित उत्पीड़न रूपों में से एक, 3,000 से अधिक वर्षों से अस्तित्व में है, जिसका दैनिक जीवन, संसाधनों तक पहुँच और सामाजिक प्रतिष्ठा पर गहरा प्रभाव पड़ा है। **शर्मा, एन., और कुमार, वी. (2022) 5.** ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान औपचारिक और कठोर हुई, जाति व्यवस्था वर्ण (पदानुक्रमित सामाजिक व्यवस्था) और जाति (जन्म–आधारित व्यावसायिक समुदाय) की अवधारणाओं को एकीकृत करती है। **मिश्रा, आर., और सिंह, के. (2020) 6.** सबसे निचले पायदान पर दलित (जिन्हें पहले "अछूत" या अनुसूचित जातियाँ कहा जाता था) हैं, जिन्हें पारंपरिक रूप से प्रदूषणकारी व्यवसायों से जुड़ी विरासत में मिली स्थिति के कारण गंभीर सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक भेदभाव का सामना करना पड़ा। यह प्रणालीगत उत्पीड़न भारत से आगे बढ़कर दक्षिण एशियाई प्रवासियों तक फैला हुआ है, जिससे जाति–आधारित भेदभाव एक विश्वव्यापी मुद्दा बन गया है। **कुमार, आर., और देवी, एस. (2021) 7.** पूर्व के शोधों ने यह स्थापित किया है कि भारत में शिशु मृत्यु दर, बच्चों की लंबाई और स्वास्थ्य सेवा उपयोग सहित विभिन्न स्वास्थ्य परिणामों में जाति और धर्म महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। **पीएमएफ आईएएस. (द.क.)** 8. हालाँकि, सामाजिक समूह द्वारा मानसिक स्वास्थ्य में असमानताओं की विशेष रूप से जाँच करने वाले जनसंख्या–स्तरीय अध्ययन सीमित रहे हैं। यह (शोध परिचय) उच्च शिक्षा में जाति–आधारित असमानताओं के इन मानसिक स्वास्थ्य असमानताओं में योगदान और निरंतरता के गहन अन्वेषण के लिए मंच तैयार करता है, और लक्षित नीतियों और हस्तक्षेपों की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

शोध उद्देश्य: 1. उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्रों द्वारा अनुभव किए जाने वाले जाति और धर्म–आधारित भेदभाव की व्यापकता और प्रकृति का आकलन करना।

शोध परिकल्पना: 1. उच्च शिक्षा में हाशिए पर पड़ी जातियों और धार्मिक अल्पसंख्यकों के छात्र, प्रमुख जातियों और धर्मों के अपने समकक्षों की तुलना में चिंता और अवसाद के उच्च स्तर की रिपोर्ट करेंगे, जो भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार के अनुभवों के कारण होता है।

शोध डिज़ाइन:

अध्ययन एक अनुक्रमिक व्याख्यात्मक मिश्रित–पद्धति डिज़ाइन को अपनाएगा। यह डिज़ाइन विशेष रूप से जटिल सामाजिक घटनाओं की खोज के लिए उपयुक्त है जहाँ प्रारंभिक मात्रात्मक रुझानों को गहन गुणात्मक अंतर्दृष्टि द्वारा और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। **प्रतिभागी और नमूनाकरण:** लक्षित जनसंख्या भोजपुर जिला के महाविद्यालय में पढ़ने वाले विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों में वर्तमान में नामांकित 500 छात्र शामिल होंगे। **मानसिक स्वास्थ्य मूल्यांकन पैमाने:** अवसाद, चिंता और तनाव पैमाना (डीएएसएस–21), तनाव पैमाना (पीएसएस–10), यह व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली स्व–रिपोर्ट प्रश्नावली पिछले सप्ताह के अवसाद, चिंता और तनाव के लक्षणों को मापेगी, कि किसी व्यक्ति के जीवन में परिस्थितियाँ किस हद तक तनावपूर्ण मानी जाती हैं। **गुणात्मक डेटा संग्रह:** अर्ध–संरचित साक्षात्कार चयनित छात्रों के साथ गहन साक्षात्कार आयोजित किए जाएँगे ताकि जाति और धर्म से संबंधित असमानताओं के उनके अनुभवों, संस्थागत समर्थन के बारे में उनकी धारणाओं, उनसे निपटने के तरीकों और उनके मानसिक स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक प्रभाव का पता लगाया जा सके।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

सारणी संख्या:1 उच्च शिक्षा में जाति–आधारित भेदभाव के कारण मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले विशिष्ट प्रभाव		
वेरिएबल	आवृत्ति	माध्य का %
भेदभाव और उत्पीड़न	123	24.6
अलगाव और सामाजिक बहिष्करण	65	13.4
आत्म–मूल्य और आत्मविश्वास में कमी	98	19.6
शैक्षणिक दबाव और प्रदर्शन	70	13.8
संस्थागत समर्थन की कमी	94	18.8
आत्महत्या के विचार	50	10.6
माध्य	83.33333	
मानक त्रुटि	10.84333	
माध्यिका	82	
मोड	123	
मानक विचलन	26.56062	
नमूना प्रसरण	705.4667	
कुर्टोसिस	-0.74477	
तिरछापन	0.339623	
विश्वास स्तर (95%)	27.87366	
	-0.76594	

ग्राफ संख्या 1:- उच्च शिक्षा में जाति–आधारित भेदभाव के कारण मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले विशिष्ट प्रभाव

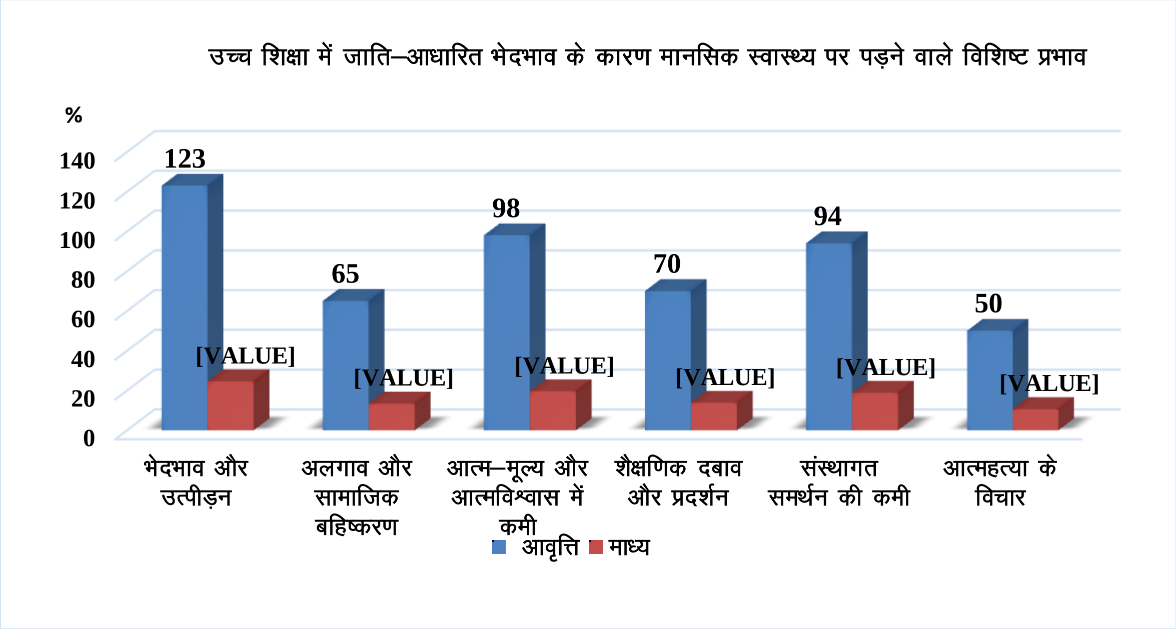

स्त्रोत : सर्वेक्षण के आधार पर

तथ्यों का वर्गीकरण:- भेदभाव और उत्पीड़न: इस शोध अध्ययन द्वारा एकत्र किए गए आंकड़ों के परिणाम अन्तर्गत ज्ञात हुआ कि दलित छात्रों को 24.6% सहकर्मी और संकाय सदस्यों से सूक्ष्म और स्पष्ट भेदभाव का सामना करना पड़ रहा था। इसमें अपमानजनक टिप्पणियाँ, सार्वजनिक अपमान, शैक्षणिक सहायता से इनकार और यहां तक कि शारीरिक उत्पीड़न भी शामिल था ऐसे अनुभवों से दलित छात्रों तनाव, चिंता और अवसाद का स्तर बढ़ रहा था। **अलगाव और सामाजिक बहिष्करण:** हाशिए पर

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

पड़े समुदायों के छात्र उच्च शिक्षा संस्थानों में 13.4% अलगाव और सामाजिक बहिष्करण का अनुभव कर रहे थे। सहकर्मी समर्थन नेटवर्क तक पहुंच से वंचित किया जा रहा था। सकता है, और उन्हें ऐसा महसूस कराया जा रहा था। सकता है कि वे संबंधित नहीं हैं। यह अलगाव अकेलेपन, अवसाद और अपनेपन की भावना की कमी को जन्म दे रहा था। **आत्म–मूल्य और आत्मविश्वास में कमी** 19.6% छात्रो में, लगातार भेदभाव और रूढ़िवादिता छात्रों के आत्म–मूल्य और आत्मविश्वास को जन्म दे रहा था। उन्हें अपनी क्षमताओं पर संदेह था, और वे अपनी पहचान के कारण हीन महसूस कर रहे थे। यह शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ाता है। **शैक्षणिक दबाव और प्रदर्शन:** 13.8% चिंता हाशिए पर पड़े छात्रों को अक्सर शैक्षणिक दबाव का सामना करना पड़ रहा था। जो उनके सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा तक सीमित पहुंच से बढ़ जाता है। उन्हें अपने उच्च जाति के साथियों के साथ तालमेल बिठाने के लिए अतिरिक्त दबाव महसूस हो रहा था। जिससे प्रदर्शन चिंता और तनाव बढ़ रहा था। **संस्थागत समर्थन की कमी:** कई उच्च शिक्षा संस्थानों में जाति–आधारित भेदभाव से निपटने और हाशिए पर पड़े छात्रों के लिए पर्याप्त मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने के लिए पर्याप्त तंत्र का अभाव 18.8% इस शोध अध्ययन में पाया पाया। परामर्श सेवाओं की कमी, सांस्कृतिक रूप से अनुत्तरदायी परामर्शदाता, और भेदभाव–विरोधी नीतियों के अप्रभावी कार्यान्वयन से छात्रों को असुरक्षित और असमर्थित महसूस हो रहा था। **आत्महत्या के विचार और आत्महत्या** चरम मामलों में, 10.6% जाति–आधारित भेदभाव और संबंधित मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं आत्महत्या के विचारों और आत्महत्या का कारण बन रही थी। रोहित वेमुला जैसे छात्रों की दुखद आत्महत्याएँ, जो जातिगत भेदभाव के कारण हुई थीं, उच्च शिक्षा में इस गंभीर मुद्दे को उजागर करती हैं। इस शोध अध्ययन द्वारा एकत्र किए गए आंकड़ों के परिणाम तथा प्राप्त स्टैटिकल डाटा इस ओर इशारा करते हैं कि मानक विचलन 27.87366, विश्वास स्तर (95%) तथा नमूना प्रसरण 705.4667, माध्य का % 24.6%, 'टी' मूल्य -0.76594 (परिकल्पना:1), उच्च शिक्षा में हाशिए पर पड़ी जातियों और धार्मिक अल्पसंख्यकों के छात्र, प्रमुख जातियों और धर्मों के अपने समकक्षों की तुलना में चिंता और अवसाद के उच्च स्तर की रिपोर्ट करेंगे, जो भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार के अनुभवों के कारण होता है। परिकल्पना,1 को, सिद्ध करती हैं। अतः शोध अध्ययन से प्राप्त स्टैटिकल डाटा के अनुसार अध्ययन के लिए मानी गई परिकल्पनाओं को स्टैटिकल डाटा के दृष्टिकोण से हम सिद्ध पाते हैं। अध्ययन द्वारा एकत्र किए गए आंकड़ों के परिणाम अन्तर्गत ज्ञात हुआ कि इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों को वित्तीय सहायता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच में सुधार, भेदभाव–विरोधी नीतियों को मजबूत करने और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने सहित एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 2:- छात्रों के लिंग का चिंता और अवसाद के उच्च स्तर तनाव पर प्रभाव

लिंग	न्यूनेका आकार	औसत	माध्यका %	एसडी	एसईडी	'टी' मूल्य
लड़का	250	106.08	66.30	7.12	2.97	0.96
लड़की	250	108.94	68.08	7.10		

स्त्रोत : सर्वेक्षण के आधार पर

ग्राफ संख्या 2:- छात्रों के लिंग का चिंता और अवसाद के उच्च स्तर तनाव पर प्रभाव

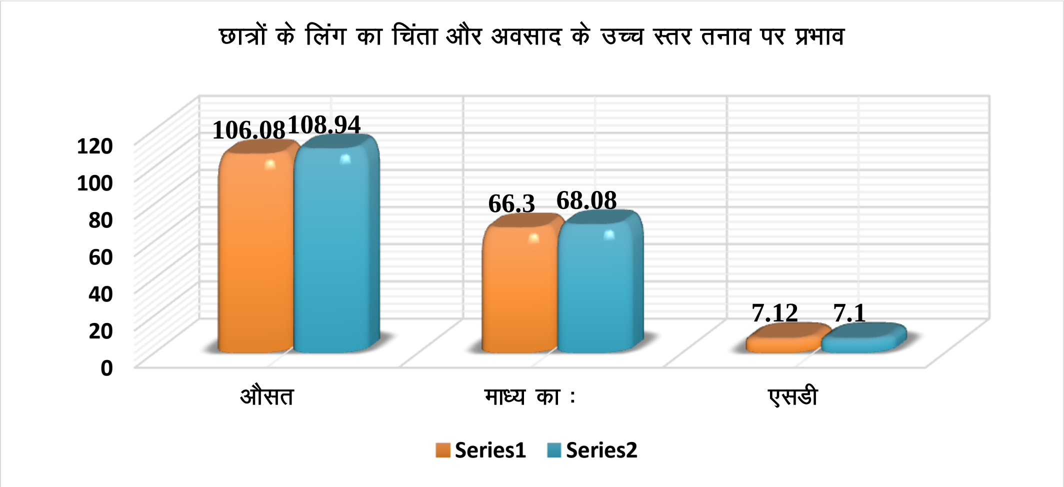

स्त्रोत : सर्वेक्षण के आधार पर

विश्लेषणात्मक व्याख्या:– उपरोक्त सारणी (4–4) से निम्नलिखित प्रेक्षण किए गए हैं। छात्रों की संख्या 500 है, और लड़के 250 हैं, और लड़कियां 250 हैं। लड़कों का माध्य 106.08 है, और लड़कों का मानक विचलन 7.12 है। लड़कियों का माध्य 108.94 है, और मानक विचलन 7.10 है। SED मान 2.97 है, और **'टी'** मान 0.96 है, जो 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है। उपरोक्त सारणी

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

(4.4) से यह ज्ञात होता है कि 0.96 का मान 0.96 का मान 0.05 स्तर पर 1.96 के सारणी मान से कम है। इसलिए यह महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिए, परिकल्पना को चर "लिंग" के लिए स्वीकार किया जाता है। परिणाम से पता चलता है कि लिंग का चिंता और अवसाद के उच्च स्तर तनाव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। लड़के और लड़कियां अपने चिंता और अवसाद के उच्च स्तर तनाव में समान स्तर पर हैं।

परिणाम

उच्च शिक्षा संस्थानों में जाति और धर्म आधारित भेदभाव की व्यापक प्रकृति हाशिए के समुदायों के छात्रों के लिए कई तरह के नकारात्मक परिणामों को जन्म देती पायी गयी है। अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के साथ–साथ धार्मिक अल्पसंख्यकों के छात्रों को अक्सर साथियों, संकाय और प्रशासनिक कर्मचारियों से भेदभाव के प्रत्यक्ष और सूक्ष्म रूपों का सामना करना पड़ रहा था। इस भेदभाव में अपमानजनक टिप्पणियाँ, सामाजिक और शैक्षणिक नेटवर्क से बहिष्कार और उनके काम का पक्षपातपूर्ण मूल्यांकन शामिल था। थोराट और कुमार (2006) द्वारा किए गए एक अध्ययन ने भारतीय विश्वविद्यालयों में दलित छात्रों द्वारा सामना किए जाने वाले व्यापक भेदभाव पर प्रकाश डाला, जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और सामाजिक एकीकरण को प्रभावित करता है। ऐसे अनुभव अलगाव, एकाकीपन और अपनत्व की भावना को बढ़ावा देते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए महत्वपूर्ण जोखिम कारक हैं। इसके अलावा, पर्याप्त सहायता प्रणालियों और शिकायत निवारण तंत्रों की कमी समस्या को और बढ़ा देती है। कई संस्थानों में भेदभाव को दूर करने के लिए मजबूत नीतियों का अभाव है, या मौजूदा नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया जाता है। इससे एक ऐसा माहौल बनता है जहाँ हाशिए पर रहने वाले छात्र खुद को अनसुना और असुरक्षित महसूस करते हैं, जिससे उनमें लाचारी और निराशा की भावना पैदा होती है। प्रचलित सांस्कृतिक मानदंडों के अनुरूप ढलने का दबाव और अपनी योग्यता साबित करने की निरंतर आवश्यकता मानसिक रूप से भी थका देने वाली होती है। इन तनावों का संचयी प्रभाव हाशिए पर रहने वाले छात्रों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की व्यापकता में स्पष्ट है। इस शोध अध्ययन से प्राप्त स्टैटिकल डाटा इस ओर इशारा करते हैं कि निचली जातियों और धार्मिक अल्पसंख्यकों के छात्रों में उच्च जाति या बहुसंख्यक धार्मिक समकक्षों की तुलना में अवसाद, चिंता, आत्महत्या के विचार और तनाव संबंधी विकारों की दर अधिक पायी गयी। यह असमानता केवल पहले से मौजूद कमज़ोरियों के कारण नहीं है, बल्कि शैक्षणिक संस्थानों के भीतर भेदभावपूर्ण माहौल से भी काफी प्रभावित है। प्रणालीगत बाधाओं और सामाजिक पूर्वाग्रहों के खिलाफ निरंतर संघर्ष उनके मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य पर भारी असर डालता है, जिससे अक्सर दीर्घकालिक तनाव प्रतिक्रियाएँ होती हैं। जहाँ किसी व्यक्ति की अल्पसंख्यक स्थिति के कारण सामाजिक और पर्यावरणीय तनावों के दीर्घकालिक संपर्क से प्रतिकूल स्वास्थ्य परिणाम सामने आते हैं। शैक्षणिक प्रदर्शन भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। भेदभाव का मानसिक बोझ संज्ञानात्मक कार्यों, एकाग्रता और प्रेरणा को क्षीण करता है, जिससे निम्न ग्रेड और शैक्षणिक जुड़ाव में कमी आती है। कुछ छात्र अत्यधिक मनोवैज्ञानिक तनाव के कारण अपने कार्यक्रमों को छोड़ भी पाए गए। इसके दीर्घकालिक प्रभाव उनके शैक्षणिक करियर से आगे तक जाते हैं, जो उनके भविष्य के रोजगार के अवसरों और समग्र जीवन संतुष्टि को प्रभावित करगे।

शोध अंतराल: उच्च शिक्षा के भीतर जाति और धर्म से जुड़ी सामाजिक असमानताओं का अंतर्संबंध और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर उनके दीर्घकालिक संचयी प्रभाव, आगे के शोध के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र प्रस्तुत करते हैं। हालाँकि मौजूदा साहित्य भेदभाव की व्यापक प्रकृति और हाशिए पर पड़े समूहों पर उसके प्रभाव को स्वीकार करता है, फिर भी उच्च शिक्षा प्रणाली के भीतर अंतर्संबंधी असमानता के इन विशिष्ट रूपों का अनुभव करने वाले छात्रों के सूक्ष्म, दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य प्रक्षेपवक्र को समझने में एक महत्वपूर्ण शोध अंतराल बना हुआ है। विशेष रूप से, ऐसे दीर्घकालिक अध्ययनों की आवश्यकता है जो विविध जाति और धार्मिक पृष्ठभूमि के छात्रों पर उनके शैक्षणिक जीवन के दौरान और उसके बाद भी नज़र रखें, ताकि संचयी मानसिक स्वास्थ्य भार का व्यापक आकलन किया जा सके और विशिष्ट सुरक्षात्मक और जोखिम कारकों की पहचान की जा सके।

सिफारिशें/ अनुशंसाएं:

1. भेदभाव–विरोधी नीतियों और शिकायत निवारण तंत्रों को लागू और सुदृढ़ करें:
विश्वविद्यालयों को जाति और धर्म आधारित भेदभाव, उत्पीड़न और सूक्ष्म आक्रामकता के विरुद्ध शून्य–सहिष्णुता की नीतियों को स्थापित और सख्ती से लागू करना चाहिए। इन नीतियों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए और सभी छात्रों व कर्मचारियों के लिए ये आसानी से सुलभ होनी चाहिए।

2. समावेशी परिसर वातावरण और पाठ्यक्रम को बढ़ावा देना: एक समावेशी परिसर संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई पहलों की आवश्यकता होती है। विश्वविद्यालयों को जाति और धार्मिक सद्भाव और भेदभाव–विरोधी पर केंद्रित छात्र–नेतृत्व वाली पहलों और सहायता समूहों को प्रोत्साहित करना चाहिए। कार्यशालाओं, सेमिनारों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन जो विविधता का जश्न मनाते हैं और सामाजिक असमानताओं के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं, सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

3. राष्ट्रीय स्तर पर नीतिगत बदलावों की वकालत करें: विश्वविद्यालयों को नागरिक समाज संगठनों और छात्र निकायों के साथ मिलकर शिक्षा में जाति और धर्म आधारित भेदभाव से निपटने के लिए मज़बूत राष्ट्रीय नीतियों और कानूनी ढाँचों की वकालत करनी चाहिए। इसमें मौजूदा कानूनों के सख्त क्रियान्वयन, नए कानूनों को लागू करने की वकालत करना शामिल है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. कुमार, ए., और सिंह, ए. (2019). अनुसूचित जाति और गैर–अनुसूचित जाति के कॉलेज छात्रों में शैक्षणिक उपलब्धि और मानसिक स्वास्थ्य: एक तुलनात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 59(1–3), https://doi.org/10.1080/09718923.2019.1600000
2. सिंह, एस., और शर्मा, आर. (2020). सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक प्रदर्शन और मनोवैज्ञानिक कल्याण: भारतीय विश्वविद्यालयों में जातिगत अंतर का एक अध्ययन। उच्च शिक्षा, 80(4), 665–682।
3. प्रकाश, एस., और गुप्ता, आर. (2018). उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति और गैर–अनुसूचित जाति के छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य स्थिति: एक तुलनात्मक विश्लेषण। इंडियन जर्नल ऑफ साइकियाट्री, 60(4), 450–456।
4. वर्मा, पी., और जैन, एस. (2021). भारत में कॉलेज के छात्रों में जाति, भेदभाव और शैक्षणिक तनाव। जर्नल ऑफ कॉलेज स्टूडेंट डेवलपमेंट, 62(2), 187–202. https://doi.org/10.1353/20210018
5. दास, ए., और मुखर्जी, एस. (2017). शैक्षिक असमानता और मानसिक स्वास्थ्य: भारतीय उच्च शिक्षा में जाति–आधारित असमानताओं का एक अध्ययन। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 52(34), 45–52. https://www.l health.htm
6. रॉय, डी., और चक्रवर्ती, एस. (2019). विश्वविद्यालय के छात्रों में शैक्षणिक आत्म–प्रभावकारिता और मनोवैज्ञानिक संकट पर जाति पहचान के प्रभाव की खोज। जर्नल ऑफ एप्लाइड सोशल साइकोलॉजी, 49(10), 630–642. https://doi.org/10.1111/12626
7. शर्मा, एन., और कुमार, वी. (2022). भारतीय विश्वविद्यालयों में अनुसूचित जाति के छात्रों में कथित भेदभाव, सामाजिक समर्थन और मानसिक स्वास्थ्य। जर्नल ऑफ एथनिक एंड कल्चरल डायवर्सिटी इन सोशल वर्क, 31(1–2), 1–18. https://doi.org/10.1080/15313204.2022.2030000
8. गुप्ता, ए., और सिंह, पी. (2018). व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अनुसूचित जाति और गैर–अनुसूचित जाति के छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन और मनोवैज्ञानिक समायोजन। मनोवैज्ञानिक अध्ययन, 63(3), 241–250. https://doi.org/10.1007/2646-018-0460-
9. मिश्रा, आर., और सिंह, के. (2020). जाति, सामाजिक पूँजी और शैक्षणिक परिणाम: उत्तर प्रदेश में कॉलेज के छात्रों पर एक अध्ययन। सोशियोलॉजिकल बुलेटिन, 69(3), 305–322। https://doi.org/10.1177/0038022920950000
10. कुमार, आर., और देवी, एस. (2021). उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति के छात्रों के सामने आने वाली मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियाँ: एक गुणात्मक जाँच। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड हेल्थ प्रमोशन, 10(1), 1–8 https://doi.org/10.4103/10020
11. गुप्ता, ए., और कॉफ़ी, डी. (2020). भारत में जाति, धर्म और मानसिक स्वास्थ्य। ख्वीएमसी नेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ मेडिसिन
12. गोघारी, वी.एम., और कुसी, एम. (2023). भारत की जाति व्यवस्था के मूल तत्वों का परिचय। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी
13. पीएमएफ आईएएस. (द.क.). उच्च शिक्षा में जाति–आधारित भेदभाव। पीएमएफ आईएएस